विषय सूची

क्रम संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	
2.	समस्या का औचित्य	
3.	समस्या कथन	
4.	सक्रियत्मक परिभाषाएं	
5.	संबंधित साहित्य	
6.	शोध उद्देश्य	
7.	शोध परिकल्पना	
8.	शोध विधि	
9.	शोध की जनसंख्या	
10.	न्यादर्श	
11.	चर	
12.	शोध के उपकरण	

“भीलवाड़ा जिले में शिक्षा और आधुनिक तकनीक के शिक्षार्थियों पर उसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन”

शिक्षा शास्त्र में

पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

निर्देशिका

डॉ मंजू

शोधार्थी

सरोज चौधरी

Enrollment No. JVR-1/22/10020

शिक्षाशास्त्र संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला महाविद्यालय जयपुर

2023

प्रस्तावना

मानव सदा ज्ञान पिपासु रहा है । जिस और उसकी कल्पना जाती है वही जानकारी प्राप्त करने की रुचि उनमें प्रबल होती जाती है। इसी का परिणाम है कंप्यूटर निर्माण आधुनिक युग मशीनी युग है जिसमें कंप्यूटर को इस युग की आधुनिक मशीन कहा जाता है। इसका प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में लगभग प्रत्येक शैक्षिक और आधुनिक प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में इसका उपयोग किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में शिक्षा के क्षेत्र में इसका खुला उपयोग हो रहा है। कंप्यूटर के माध्यम से यूजर एकाउंटिंग एंड इन्वेंटरी कांट्रैक्टिंग एंड पेरोल आदि का कार्य आसानी से कर सकता है । ऐसी परिस्थितियों में विद्यार्थियों पर इसका सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

21वी सदी तकनीकी शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, जहां समाज के प्रत्येक दिन में एक नई तकनीकी देखने को और समझने को मिल रही है । यह नई तकनीकी कंप्यूटर के विकास का ही एक परिणाम है । सूचना प्रौद्योगिकी ने जहां एक और समाज को नई दिशा दी है वही वैश्वीकरण को भी नया आयाम दिया है । हम विज्ञान के युग में रहते हैं। विज्ञान में हमें अनेक आश्चर्यजनक वस्तुएं भी दी है। उनमें से एक कंप्यूटर भी है। आज कंप्यूटर प्रत्येक दुकान ,स्कूल ,ऑफिस ,व्यापार व प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है। ऐसे में इस आश्चर्यजनक मशीन के बिना जीवन की कल्पना करना भी असंभव हो गया है।

21वी सदी सूचना एवं संचार क्रांति के नाम से जानी जाती है इसके फलस्वरूप समस्त विश्व में एक गांव में बदला जा रहा है। सूचनाएं दैनिक जीवन का एक अपरिहार्य अंग बन गई है, जिसको त्वरित गति से पहुंचाने में इंटरनेट की अहम भूमिका बन चुका है।

इंटरनेट कंप्यूटर नेटवर्क का एक विश्वव्यापी संगठन है। जब हम इंटरनेट पर काम कर रहे होते हैं, तो उन करोड़ों व्यक्तियों के समुदाय का एक हिस्सा होते हैं, जो अपने विचारों तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान के लिए कंप्यूटर का प्रयोग करते हैं।

इंटरनेट को सूचनाओं का राजमार्ग भी कहा जाता है। इंटरनेट की उत्पत्ति 1969 में हुई जबकि इसे अपार्टनेट कहा जाता है। यह मुख्य रूप से सैन्य उद्देश्यों के लिए था। शीघ्र

ही यह गैर सरकारी सामान्य शैक्षिक नेटवर्क से में मिल गया है और धीरे-धीरे सन 1979 में से इंटरनेट कहा जाने लगा

समस्या का औचित्य

साहित्य पत्रिकाओं और पुस्तकों से परामर्श करने के बाद मुझे इस विषय के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिली, इसलिए मैंने इस विषय को आगे के शोध कार्य के लिए चुनने का फैसला किया ताकि छात्रों और पेशेवरों को भविष्य के कैरियर में इसे बढ़ावा देने के लिए ज्ञान को उजागर करने में सक्षम बनाया जा सके, यही कारण है कि विषय है शोधकर्ता द्वारा चयनित क्योंकि आधुनिक तकनीक आज शिक्षा को बहुत आगे ले कर जा रही है और शिक्षार्थियों को बहुत से अवसर प्रदान कर रही है।

समस्या कथन

"भीलवाड़ा जिले में शिक्षा और आधुनिक तकनीक के शिक्षार्थियों पर उसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन"

सक्रियत्मक परिभाषाएं

ब्रॉउन के अनुसार शिक्षा----

" शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है।"

अरस्तू के अनुसार शिक्षा--

"शिक्षा व्यक्ति की मानसिक शक्ति का विशेष रूप से विकास करती है, जिससे वह परम सत्य, शिव और सुन्दर के चिन्तन का आनन्द प्राप्त कर सके।"

महात्मा गाँधी के अनुसार–

"शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, आत्मा एवं मन का सर्वोत्कृष्ट विकास कर सके।"

उर्सुला फ्रेंकलिन के अनुसार–

" रियल वर्ल्ड ऑफ टेक्नोलॉजी "व्याख्यान में अवधारणा की एक और परिभाषा दी; " यह अभ्यास है, जिस तरह से हम इधरहैं। करते चीजें की उधर–"

डब्ल्यू. ब्रायन आर्थर के अनुसार–

"एक मानव उद्देश्य को पूरा करने का एक साधन।"

संबंधित साहित्य

1.श्वेता सिन्हा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग, नेशनल पी.जी. कॉलेज, लखनऊ–226001, उ.प्र., भारत, singh_shweta2005@yahoo.com

सारांश

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology, ICT) एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें सूचना के संचार के लिये हर तरह की प्रौद्योगिकी समाहित है। यह वो प्रौद्योगिकी है जो कि सूचना के संचालन (रचना, भंडारण और उपयोग) की योग्यता रखता है तथा संचार के विभिन्न माध्यमों (रेडियो, टेलिविजन, सेलफोन, कम्प्यूटर, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, विभिन्न सेवाओं और अनुप्रयोगों) से सूचना के प्रसारण की सुविधा प्रदान करता है। कृषि, स्वास्थ्य, शासन प्रबन्ध और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में आई.सी.टी. के विकास का प्रभाव है। यह लेख उच्च शिक्षा में आई.सी.टी. की भूमि को केंद्रित कर रहा है। शैक्षिक अवसरों को विस्तृत करने, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास एवं शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये आई.सी.टी. एक प्रभावशाली साधन है। सरकार आई.सी.टी. पर बहुत खर्च कर रही है। उच्च शिक्षा में बढ़ता नामांकन अनुपात तथा शिक्षा के विस्तार में प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता में आई.सी.टी. की भूमिका पर नेशनल मिशन ऑफ एजुकेशन बल देता है। आई.सी.टी. के शिक्षा में अभिग्रहण के प्रमुख कारक है– किसी भी प्रणाली का लक्ष्य, कार्यक्रम और पाठ्यक्रम, पढ़ने तथा पढ़ाने के तरीके, अधिगम सामग्री और संसाधन, संवाद, समर्थन और वितरण प्रणाली छात्र एट्यूटर्स, स्टाफ और अन्य विशेषज्ञ, प्रबंधन और मूल्यांकन। अतः आई.सी.टी. के कार्यान्वयन से उच्च शिक्षा में निश्चित ही सुधार होगा।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एक व्यापक क्षेत्र है जिसमें सूचना के संचार के लिये हर तरह की प्रौद्योगिकी समाहित है। यह वो प्रौद्योगिकी है जो कि सूचना के संचालन (रचना, भंडारण और उपयोग की योग्यता रखता है तथा संचार के विभिन्न माध्यमों (रेडिया टेलिविजन,

सेल फोन, कंप्यूटर और नेटवर्क, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, सेटेलाइट सिस्टम, विभिन्न सेवाओं और अनुप्रयोगों) से सूचना के प्रसारण की सुविधा प्रदान करता है। आई.सी.टी. कई लोगों के जीवन का अविभाज्य तथा स्वीकृत अंग बन गया है। कृषि, स्वास्थ्य, शासन प्रबन्ध और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में के विकास का प्रभाव है। आई.सी.टी. एक विविध संग्रह है जिसमें विभिन्न प्रौद्योगिकी उपकरण निहित हैं। साथ ही साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग और इलेक्ट्रॉनिक मेल आदि जैसे प्रोटोकॉल और सेवाएँ भी सम्मिलित हैं। आई.सी.टी. एक प्लंबिंग प्रणाली की तरह है जहाँ सूचना (संग्रहित पानी) सूचना प्रौद्योगिकी (भण्डारण टंकी) में संचयित होती है तथा संचार प्रौद्योगिकी (पाइप) के माध्यम से संचार (बहता हुआ पानी) प्रापक के पास पहुँचता है। उपयोगी डाटा और सूचना के सृजन, संचरण, भंडारण, पुनः प्राप्ति और डिजिटल रूपों में संचालन जैसी आई.सी.टी. की डिजिटल प्रौद्योगिकी सूचना के पूरे चक्र में प्रयोग में लाई जाती है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विभिन्न घटक हैं-

1. कम्प्यूटर हार्डवेयर प्रौद्योगिकी - इसके अन्तर्गत माइक्रो-कम्प्यूटर, सर्वर, बड़े मेनफ्रेम कम्प्यूटर के साथ-साथ इनपुट, आउटपुट एवं संग्रह करने वाली युक्तियाँ आती हैं।

2. कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी - इसके अंतर्गत ऑपरेटिंग सिस्टम वेब ब्राउजर डाटाबेस प्रबन्धन प्रणाली (DBMS) सर्वर तथा व्यापारिक, वाणिज्यिक सॉफ्टवेयर आते हैं।

3. दूरसंचार व नेटवर्क प्रौद्योगिकी - इसके अन्तर्गत दूरसंचार के माध्यम, प्रोसेसर तथा इंटरनेट से जुड़ने के लिये तार या बेतार पर आधारित सॉफ्टवेयर, नेटवर्क-सुरक्षा, सूचना का कूटन (क्रिप्टोग्राफी) आदि हैं।

4. मानव संसाधन - तंत्र प्रशासक (System Administrator) नेटवर्क प्रशासक (Network Administrator) आदि।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की महत्ता निम्नलिखित है-

1. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, सेवा अर्थतंत्र (Service Economy) का आधार है।

2. पिछड़े देशों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिये सूचना प्रौद्योगिकी एक उपयुक्त तकनीक है।

3. गरीब जनता को सूचना-सम्पन्न बनाकर ही निर्धनता का उन्मूलन किया जा सकता है।

4. सूचना-संपन्नता से सशक्तिकरण होता है।

5. सूचना तकनीकी, प्रशासन आर सरकार में पारदर्शिता लाती है, इससे भ्रष्टाचार को कम करने में सहायता मिलती है।

6. सूचना तकनीक का प्रयोग योजना बनाने, नीति निर्धारण तथा निर्णय लेने में होता है।

7. यह नये रोजगारों का सृजन करती है।

उच्च शिक्षा में आई.सी.टी. का बहुत महत्त्व है। निवेश से लेकर प्रबंधन, दक्षता, शिक्षा शास्त्र, गुणवत्ता, अनुसंधान और नवाचार के प्रमुख मुद्दों से निपटने के लिये इस्तेमाल किये जाने वाली प्रौद्योगिकियों तक, उच्च शिक्षा में आई.सी.टी. के परिचय से पूरी शिक्षा प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

उच्च शिक्षा में आई.सी.टी. के अभिग्रहण से निम्नलिखित सुविधाएँ प्राप्त होती हैं-

1. दूरवर्ती स्थानों में पढ़ाई की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है।

2. उच्च शिक्षा संस्थानों में अधिक पारदर्शिता प्रणाली लाने से उनकी प्रक्रियाओं और अनुपालन मानदंडों को मजबूती मिलती है।

3. यह छात्रों के प्रदर्शन, नियुक्ति, वेबसाइट एनालिटिक्स, और ब्रांड के ऑडिट के लिये सोशल मीडिया मेट्रिक्स का विश्लेषण करने के लिये प्रयोग किया जाता है।

4. इंटरनेट (वर्चुअल क्लास रूम), उपग्रह और अन्य माध्यमों द्वारा पाठ्यक्रम वितरण के साथ दूरस्थ शिक्षा सुविधाजनक बना दी गयी है।

शिक्षण में कम्प्यूटर आधारित शिक्षा तकनीकों का उपयोग भारत की प्रसिद्ध शिक्षा प्रणाली और संस्थानों द्वारा अपनाया गया है। शब्दों और प्रतीकों की विविधता कम्प्यूटर की महान शक्ति है जो शैक्षणिक प्रयास का केंद्र है। ई-लर्निंग और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षण अधिक रोचक और आसान हो रहा है। इंटरनेट तथा वर्ल्ड वाइड वेब के माध्यम से शिक्षक अपने विद्यार्थियों तक पहुँच सकते हैं और उनको घर बैठे पढ़ा सकते हैं। इंटरनेट मानव ज्ञान का एक उच्चतम संग्रह है। आई.सी.टी. डिजिटल पुस्तकालय जैसे डिजिटल संसाधनों के सृजन की अनुमति देता है, जहाँ विद्यार्थी, शिक्षक और व्यवसायी शोध सामग्री तथा पाठ्यक्रम सामग्री तक पहुँच सकते हैं। आई.सी.टी. शैक्षणिक संस्था के दिन-प्रतिदिन के प्रशासनिक गतिविधियों को आसान और पारदर्शी तरीके से नियंत्रित करने तथा समन्वय और निगरानी के लिये अवसर प्रदान करता है। पंजीकरण/नामांकन, पाठ्यक्रम आवंटन, उपस्थिति की निगरानी, समय सारिणी/वर्ग अनुसूची, प्रवेश के लिये आवेदन, छात्रों के दाखिले में जाँच इस तरह की जानकारियाँ ई-मीडिया द्वारा पाई जा सकती हैं। आवश्यकता है, प्रेरणा शक्ति को प्रोत्साहित करने का यह सही समय है क्योंकि आशा है कि आई.सी.टी. के परिपालन से जीवन के हर क्षेत्र में प्रबल उन्नति को प्राप्त किया जा सकता है।

2. विज्ञान और तकनीकी पर निबंध (Science and Technology Essay in Hindi)

By अर्चना सिंह / January 13, 2017

इस आधुनिक दुनिया में एक देश के लिए दूसरे देशों से मजबूत, ताकतवर और अच्छी तरह से विकसित होने के लिए विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में नए आविष्कार करना बहुत आवश्यक है। इस प्रतियोगी समाज में, हमें आगे बढ़ने और जीवन में सफल व्यक्ति बनने के लिए अधिक तकनीकों की जरूरत है। आज मनुष्य ने विज्ञान और तकनीकी में बहुत विकास कर लिया है। अब तकनीकी के बिना रह पाना नामुमकिन हो गया है। इसने हमारे जीवन को सरल, आसान और सुविधाजनक बना दिया है।

प्रस्तावना

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि, हम विज्ञान और तकनीकी के समय में रह रहे हैं। हम सभी का जीवन वैज्ञानिक आविष्कारों और आधुनिक समय की तकनीकों पर बहुत अधिक निर्भर है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने लोगों के जीवन को बड़े स्तर पर प्रभावित किया है। इसने जीवन को आसान, सरल और तेज बना दिया है। नए युग में, विज्ञान के विकास ने हमें बैलगाड़ी की सवारी से हवाई यात्रा की सुविधा तक पहुंचा दिया है।

आधुनिक तकनीकी

विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधुनिकरण के हर पहलू को प्रत्येक राष्ट्र में लागू किया गया है। जीवन के हरेक क्षेत्र को सही ढंग से संचालित करने और लगभग सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए आधुनिक उपकरणों की खोज की गई है। इसे चिकित्सा, शिक्षा, बुनियादी ढांचा, ऊर्जा निर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में लागू किए बिना सभी लाभों को प्राप्त करना संभव नहीं था। यदि हम विज्ञान में प्रगति नहीं करते तो आज भी हमारा जीवन पहले की तरह दुष्कर और कठिन होता। नवीन आविष्कारों ने हमें बहुत लाभ पहुँचाया है। हमारे चारों तरफ अनेक तकनीकी मौजूद है।

मोबाइल फोन, टीवी, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ओवन, फ्रिज, वाशिंग मशीन, पानी निकालने वाली मोटर, मोटर साइकिल, जहाज, ट्रेन, बस, यातायात के साधन, सभी कुछ आधुनिक तकनीकी की सहायता से सम्भव हो सका है। नई तरह की दवाइयां, चिकित्सा उपकरणों की सहायता से अब जटिल रोगों का इलाज भी सम्भव हो गया है। इस तरह से हम कह सकते है कि आज के समय में आधुनिक तकनीकी के बिना हमारा जीवन भी संभव नही है।

निष्कर्ष

हमने अपने दैनिक जीवन में जो कुछ भी सुधार देखे हैं, वो सब केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के कारण है। देश के उचित विकास और वृद्धि के लिए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ चलना बहुत आवश्यक है। गाँव अब कस्बों के रुप में और कस्बे शहरों के रुप में विकसित हो रहे हैं और इस प्रकार से अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों में भी काफी विकास देखने को मिला है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कारण ही आज के समय में हमारा देश इतने तेजी से विकास कर पा रहा है।

3. प्रस्तावना

समाज में विज्ञान और तकनीकी वाद-विवाद का विषय बन गए हैं। एक तरफ तो यह आधुनिक जीवन के लिए आवश्यक है, जहाँ अन्य देश तकनीकी और विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर विकास कर रहे हैं, वहीं यह अन्य देशों के लिए भी आवश्यक हो जाता है कि, वे भी इसी तरह से भविष्य में सुरक्षा के लिए ताकतवर और अच्छी तरह से विकसित होने के लिए निरंतर वैज्ञानिक विकास करते रहे। ये विज्ञान और प्रौद्योगिकी ही है, जिन्होंने अन्य कमजोर देशों को भी विकसित और ताकतवर बनने में मदद की है।

मानवता के भले के लिए और जीवन के सुधार के लिए हमें हमेशा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मदद लेनी होगी। यदि हम तकनीकों की मदद नहीं लेते; जैसे- कम्प्यूटर, इंटरनेट, बिजली, आदि तो हम भविष्य में कभी भी आर्थिक रुप से मजबूत नहीं होंगे और

हमेशा पिछड़े हुए ही रहेंगे यहाँ तक कि इसके बिना हम आज के इस प्रतियोगी और तकनीकी संसार में जीवित भी नहीं रह सकते हैं।

प्रौद्योगिकियों के उदाहरण

चिकित्सा, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, खेल, नौकरियाँ, पर्यटन आदि विज्ञान और प्रौद्योगिकियों के उदाहरण है। ये सभी प्रकार की उन्नति हमें दिखाती हैं कि, कैसे दोनों हमारे जीवन के लिए समान रुप से आवश्यक है। हम अपनी जीवन–शैली में प्राचीन समय के जीवन के तरीकों और आधुनिक समय के जीवन के तरीकों की तुलना करके स्पष्ट रुप में अन्तर देख सकते हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में उच्च स्तर की वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति ने बहुत सी खतरनाक बीमारियों के इलाज को सरल बना दिया है जो पहले संभव नहीं था। तकनीकी ने बीमारीयों का इलाज दवाइयों और आपरेशन के माध्यम से करने में चिकित्सकों की प्रभावी ढंग से मदद करने के साथ ही भंयकर बीमारियों, जैसे– कैंसर, एड्स, मधुमेह (डायबीटिज़), एलज़ाइमर, लकवा आदि के टीकों के शोध में भी काफी मदद की है।

भारत अब विज्ञान और उन्नत तकनीकी के क्षेत्र में अपने नए आविष्कारों के माध्यम से तेजी से विकास करने वाला देश बन गया है। विज्ञान और तकनीकी आधुनिक लोगों की आवश्यकता और जरूरतों को पूरा करने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

निष्कर्ष

आजादी के बाद, देश के राष्ट्रीय विकास के लिए हमारे देश ने विज्ञान के प्रसार और विस्तार को बढ़ावा देना शुरु किया है। सरकार द्वारा बनाई गई विभिन्न नीतियों ने पूरे देश में आत्मनिर्भरता और टिकाऊ विकास और वृद्धि पर जोर दिया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी दोनों ने ही देश में असाधारण ढंग से आर्थिक विकास और सामाजिक विकास को उन्नत करने का कार्य किया है।

4. प्रस्तावना

विज्ञान और तकनीकी लोगों के जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है, यह सिंधु घाटी सभ्यता से ही हमारे जीवन का एक महत्वरपूर्ण हिस्सा रहा है। ऐसा पाया गया है कि, आग और पहिये की खोज करने के लिए लगभग पाँच आविष्कार किए गए थे। दोनों ही आविष्कारों को वर्तमान समय के सभी तकनीकी आविष्कारों का जनक कहा जाता है। आग के आविष्कार के माध्यम से लोगों ने ऊर्जा की शक्ति के बारे में पहली बार जाना था। तभी से, लोगों में रुचि बढ़ी और उन्होंने जीवन–शैली को सरल और आसान बनाने के लिए बहुत से साधनों पर शोध के और अधिक कठिन प्रयास करने शुरु कर दिए।

आविष्कार

भारत प्राचीन समय से ही पूरे संसार में सबसे अधिक प्रसिद्ध देश है हालांकि, इसकी गुलामी के बाद, इसने अपनी पहचान और ताकत को खो दिया था। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, इसने भीड़ में अपनी खोई हुई ताकत और पहचान को दुबारा से प्राप्त करना शुरु कर दिया है। वो विज्ञान और प्रौद्योगिकी ही थे, जिन्होंने पूरे विश्व में भारत को अपनी वास्तविक पहचान को प्रदान किया है। भारत अब विज्ञान और उन्नत तकनीकी के क्षेत्र में अपने नए आविष्कारों के माध्यम से तेजी से विकास करने वाला देश बन गया है। विज्ञान और तकनीकी आधुनिक लोगों की आवश्यकता और जरूरतों को पूरा करने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक

तकनीकी में उन्नति के कुछ उदाहरण, रेलवे प्रणाली की स्थापना, मैट्रो की स्थापना, रेलवे आरक्षण प्रणाली, इंटरनेट, सुपर कम्प्यूटर, मोबाइल, स्मार्ट फोन, लगभग सभी क्षेत्रों में लोगों की ऑनलाइन पहुँच, आदि है। भारत की सरकार बेहतर तकनीकी विकास के साथ ही देश में विकास के लिए अंतरिक्ष संगठन, और कई शैक्षणिक संस्थाओं (विज्ञान में उन्नति के लिए

भारतीय संगठन) में अधिक अवसरों का निर्माण कर रही है। भारत के कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिक जिन्होंने भारत में (विभिन्न क्षेत्रों में अपने उल्लेखनीय वैज्ञानिक शोध के माध्यम से) तकनीकी उन्नति को संभव बना दिया, उनमें से कुछ सर जे.सी. बोस, एस.एन. बोस, सी.वी. रमन, डॉ. होमी जे. भाभा, श्रीनिवास रामानुजन, परमाणु ऊर्जा के जनक डॉ. हर गोबिंद सिंह खुराना, विक्रम साराभाई आदि है।

आधुनिक तकनीकी का महत्व

विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में विकास किसी भी देश के लोगों के लिए दूसरे देश के लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए बहुत अधिक आवश्यक है। विज्ञान और तकनीकी का विकास तथ्यों के विश्लेषण और उचित समझ पर निर्भर करता है। प्रौद्योगिकी का विकास सही दिशा में विभिन्न वैज्ञानिक ज्ञान के आवेदन के तरीकों पर निर्भर करता है।

निष्कर्ष

विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधुनिकरण के हर पहलू को प्रत्येक राष्ट्र में लागू किया गया है। जीवन के हरेक क्षेत्र को सही ढंग से संचालित करने और लगभग सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए आधुनिक उपकरणों की खोज की गई है। इसे चिकित्सा, शिक्षा, बुनियादी ढांचा, ऊर्जा निर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में लागू किए बिना सभी लाभों को प्राप्त करना संभव नहीं था।

5. प्रस्तावना

विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधुनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इसने मानव सभ्यता को गहराई में जाकर प्रभावित किया है। आधुनिक जीवन में तकनीकी उन्नति ने पूरे संसार में हमें बहुत अधिक उल्लेखनीय अंतर्दृष्टि दी है। वैज्ञानिक क्रान्तियों ने 20वीं शताब्दी में अपनी पूरी गति पकड़ी और 21वीं सदी में और भी अधिक उन्नत हो गई। हमने नए

तरीके और लोगों के भले के लिए सभी व्यवस्थाओं के साथ नई सदी में प्रवेश किया है। आधुनिक संस्कृति और सभ्यता विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर निर्भर हो गई है क्योंकि वे लोगों की जरूरत और आवश्यकता के अनुसार जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं।

भारतीय आर्थिक स्थिति में सुधार

भारत रचनात्मक और मूलभूत वैज्ञानिक विकास और सभी दृष्टिकोण में दुनिया भर में का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है। सभी महान वैज्ञानिक खोजो और तकनीकी उपलब्धियों ने हमारे देश में भारतीय आर्थिक स्थिति को सुधारा है और तकनीकी रूप से उन्नत वातावरण को विकसित करने के लिए नई पीढ़ी के लिए कई नए तरीकों का निर्माण किया है। गणित, आर्किटेक्चर, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, धातु कर्म, प्राकृतिक दर्शन, भौतिक विज्ञान, कृषि, स्वास्थ्य देखभाल, फार्मास्यूटिकल्स, खगोल भौतिकी, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, आवेदन, रक्षा आदि के क्षेत्र में कई नए वैज्ञानिक शोध और विकास संभव हो गए हैं।

सकारात्मक परिवर्तन

शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक शोध, विचारों और तकनीकों का परिचय नई पीढ़ी में बड़े स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन लाया है और उन्हें अपने स्वयं के हित में काम करने के लिए नए अवसरों की विविधता प्रदान की है। भारत में आधुनिक विज्ञान को वैज्ञानिकों ने अपने निरंतर और कठिन प्रयासों के द्वारा पुनः जीवंत बना दिया है। वास्तव में वह भारत के महान वैज्ञानिक ही है, जिन्होंने हमारे देश के तेजी से तरक्की को संभव किया है।

आजादी के बाद, देश के राष्ट्रीय विकास के लिए हमारे देश ने विज्ञान के प्रसार और विस्तार को बढ़ावा देना शुरु किया है। सरकार द्वारा बनाई गई विभिन्न नीतियों ने पूरे देश में आत्मनिर्भरता और टिकाऊ विकास और वृद्धि पर जोर दिया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी दोनों ने ही देश में असाधारण ढंग से आर्थिक विकास और सामाजिक विकास पर असर डाला है।

देश के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का योगदान

हमारे देश को स्वतंत्र हुए 70 साल हो गए है। इतने वर्षों में देश के विकास में विविध क्षेत्रों का योगदान रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी भी एक ऐसा क्षेत्र है जिसने देश को विकास की राह पर आगे बढ़ाने में अपना सबसे अधिक योगदान दिया है। असल में हमारे जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें विज्ञान का दखल न हो। भारत के कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिक जिन्होंने भारत को तकनीकी उन्नति प्रदान की है , उनमें से कुछ सर जे.सी. बोस, एस.एन. बोस, सी.वी. रमन, डॉ. होमी जे. भाभा, श्रीनिवास रामानुजन, परमाणु ऊर्जा के जनक डॉ. हर गोबिंद सिंह खुराना, विक्रम साराभाई आदि का नाम प्रमुख है।

निष्कर्ष

किसी भी क्षेत्र में तकनीकी विकास उस देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने का कार्य करता है। भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शक्ति में सुधार के लिए भारत सरकार ने वर्ष 1942 में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद और 1940 में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान के बोर्ड का निर्माण किया। देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास पर जोर देने के लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं और विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान संस्थानों की एक श्रृंखला स्थापित की है, जोकि हमारे देश के वैज्ञानिक प्रगति में अपना अहम योगदान दे रही है।

उद्देश्य

इस अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य है ---

1. भीलवाड़ा जिले के शिक्षा और आधुनिक तकनीक के शिक्षार्थियों पर सकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना I

2. भीलवाड़ा जिले के शिक्षा और आधुनिक तकनीक के शिक्षार्थियों पर नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना I

3. भीलवाड़ा जिले के शिक्षा और आधुनिक तकनीक के शिक्षार्थियों पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

परिकल्पना जो विधि के प्रभाव में कोई अंतर नहीं था या परीक्षा के परिणाम से पता चलता है कि दो विधियों का प्रभाव समान था इस प्रकार की परिकल्पना को आमतौर पर शून्य परिकल्पना के रूप में संदर्भित किया जाता है और इसका अर्थ है कि इसमें कोई बड़ा अंतर नहीं है सैम्पलिंग में इलेक्ट्रीशियन से उत्पन्न होने वाले दो तरीकों के प्रभाव या अन्य यादृच्छिक कारकों में अधिक कीमतों में सांख्यिकीय शब्दावली इस परिकल्पना को शुरू किया जाना चाहिए अधिक कीमती सांख्यिकीय शब्दावली में इस परिकल्पना को कहा जाना चाहिए कि दो नमूने एक ही आबादी से हैं, निर्देश की एक ही विधि या यह कि परिकल्पना कि दो तरीकों से प्राप्त दो माध्य अंकों के बीच का वास्तविक अंतर शून्य है, परिकल्पना को खारिज नहीं किया जा सकता है अध्ययन किए जाने वाले जनसंख्या चरों के चयन के तरीके का भुगतान करें और डेटा को वर्गीकृत करने की प्रक्रिया की जांच ने इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पना तैयार की है -----

1. भीलवाड़ा जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में शिक्षा और आधुनिक तकनीक पर सकारात्मक प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.भीलवाड़ा जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में शिक्षा और आधुनिक तकनीक पर सकारात्मक प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. भीलवाड़ा जिले के ग्रामीण में शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में शिक्षा और आधुनिक तकनीक पर सकारात्मक प्रभावों में कोई अंतर नहीं है।

4. भीलवाड़ा जिले के ग्रामीण में शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में शिक्षा और आधुनिक तकनीक पर सकारात्मक प्रभावों में कोई अंतर नहीं है।

5. भीलवाड़ा जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में शिक्षा और आधुनिक तकनीक पर नकारात्मक प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. भीलवाड़ा जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में शिक्षा और आधुनिक तकनीक पर नकारात्मक प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. भीलवाड़ा जिले के ग्रामीण में शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में शिक्षा और आधुनिक तकनीक पर नकारात्मक प्रभावों में कोई अंतर नहीं है।

8. भीलवाड़ा जिले के ग्रामीण में शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में शिक्षा और आधुनिक तकनीक पर नकारात्मक प्रभावों में कोई अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस समस्या का हल करने के लिए शोधकर्ताओं ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है और इस अध्ययन में यज्ञ विधि का भी प्रयोग किया गया है सर्वेक्षण विधि किसे दी गई घटना की वर्तमान स्थिति से संबंधित जानकारी प्रदान करने के लिए बनाई गई है

शोधकर्ता ने इस उद्देश्य के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया है सर्वेक्षण विधि को किसी दिए गए घटना की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, यह मौजूदा संबंधों के लिए मौजूदा स्थितियों से संबंधित है जो वर्तमान व्यवहार

के दृष्टिकोण या दृष्टिकोण प्रक्रियाओं के वर्तमान विश्वास बिंदुओं से संबंधित है। जो जा रहे हैं और उनके विकासशील मित्रों को प्रभावित करते हैं।

जनसंख्या

वर्तमान अध्ययन की जनसंख्या में भीलवाड़ा जिले में सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्र व छात्रा है ।

वर्तमान अध्ययन की जनसंख्या में भीलवाड़ा जिले में ग्रामीण में शहरी विद्यालयों के छात्र व छात्रा है ।

व्यक्तियों के किसी भी समूह की जनसंख्या जिसमें एक से अधिक लक्षण समान हैं जो अनुसंधान के हित में हैं ।

जनसंख्या यह उस समूह के अधिक प्रतिबंधित भाग के लिए एक विशेष प्रकार के सभी व्यक्ति हो सकते है ।

न्यादर्श

शिक्षा	**क्षेत्र**	**लिंग**	**शिक्षार्थियों की संख्या**
शिक्षार्थी	**शहरी**	**छात्र**	**100**
		छात्रा	**100**
	ग्रामीण	**छात्र**	**100**
		छात्रा	**100**
	कुल	**छात्र / छात्रा**	**400**

चर

स्वतंत्र चर ---- सरकारी व निजी विद्यालय और ग्रामीण में शहरी विद्यालयों

आश्रित चर--- छात्र और छात्रा

शोध के उपकरण

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण मानकीकृत उपकरण प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए जाएंगे।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

मानक विचलन
माध्य
टी – परीक्षण